International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आतंकवाद के उदय में पष्चिम की असफल कुटनीति का योगदान

रविन्द्रसिंह भाटी

एम.ए. यु.जी.सी. नेट, बी.एड.

शोध निष्कर्ष

आतंकवाद के उदय के जड़ों को प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई तीन गुप्त संधियों (1. हुसैन महान संधि, 2. साइक्स पिकोट संधि व 3. बाल्फोर घोषणा) से जोड़ा जा सकता है। परन्तु इसे संचित कर वर्तमानस्वरूप देने का श्रेय अमेरिका द्वारा सउदी अरब, अफगानिस्तान, ईराक व सीरिया में की गई कार्यवाहियाँ है। तालिबान का उदय उसने रूस के खिलाफ किया आई.एस.आई.एस. का जन्म उसके ईराक अभियान तथा यमन में आतंकवाद का जन्म उसके हथियारों के द्वारा फैला है। फिलिस्तीन में इजरायल की कार्यवाहियाँ जॉर्डन, लेबनान व गाजा पट्टी में लगातार हो रही आतंकवादी गतिविधियों का कारण संयुक्त राष्ट्र संघ में इजरायल के खिलाफ होने वाले प्रस्तावों के वीटो करने से फिलिस्तीन संकट समाधान नही हो रहा है अंत आतंकवाद को अपने स्वार्थ के लिए पोषण देने का श्रेय ब्रिटिश गुप्त संधियों व अमेरिकी वाणिज्यवाद व शीत युद्ध में तथा ईराक व अफगानिस्तान में की गई सैनिक कार्यवाहियाँ है जिसका परिणाम इस क्षेत्र में मानवीय जीवन व अन्तर्राष्ट्रीय शांति के लिए घातक है।

संकेताक्षर : आतंकवाद, गुप्त संधि हुसैन महान संधि, साइक्स पिकोट संधि, बाल्फोर घोषणा, फिलीस्तीनी संकट, वीटो,

वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव व भाईचारे के खिलाफ शत्रु के रूप में दो प्रमुख समस्यायें हैं। इसमें से प्रथम समस्या है शरणार्थी संकट तथा अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद। आतंकवाद की समस्याा का उदय अरबराष्ट्रों में 1980 के दशक के अन्त से प्रारंभ हुआ इसके उदय में बिट्रिश हुकूमत द्वारा तुष्टीकरण व फुट डाल राज करने की नीति तथा शीत युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के सोवियत संघ के अफगानिस्तान में आक्रमण के समय अरब व मध्य एशियाई देशो में प्रारंभ किये प्रयासो से माना जाता है।

अतः आतंकवाद के उदय के दो प्रमुख कारण माने जाते है –
अ) बिट्रिश सरकार द्वारा विश्व युद्धों में अपनाई नीतियाँ।
ब) अमेरिका द्वारा शीत युद्ध में किये गये कार्य के द्वारा ।
स) मुस्लिम कट्टरवाद का जन्म

प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ में जर्मनी तथा ओटोमान साम्राज्य व आस्ट्रीया के संगठन ने फ्रांस में मेजेक लाईन तक अधिकार कर लिया था। इस समय तक मित्र राष्ट्रों की स्थिति कमजोर थी तथा उनकी वितिय परिस्थितियाँ भी डावाडोल की स्थिति में आ गई थी। अंत में तुर्की (ओटोमन साम्राज्य) की भौगोलिक स्थिति उसके प्रमुख उपनिवेश भारत के मार्ग समीप होने के कारण वो रास्ता तात्कालीन समय में बिट्रिश हुकूमत के चोक पोंईंट बन सकता था जर्मनी ने ओटोमन साम्राज्य में रेल लाईन का मार्ग तैयार कर लिया था। अतः ओटोमन साम्राज्य में अशांति पैदा कर युद्ध से ध्यान दूर करने के लिए उन्होंने अरब राष्ट्रो (सीरिया, लेबनान, मिश्र इत्यादि) में जन आन्दोलन प्रारंभ कराने का प्रयास किया तथा संधि की जिसमें स्वतंत्रता का युद्ध समाप्ति के बाद वादा किया गया। इसमें अरब राष्ट्रों में जन

संघर्ष प्रारंभ हुआ जिसका प्रभाव धुरी राष्ट्रों के युद्ध प्रयासों पर पड़ा। इससे ब्रिटिश सरकार को युद्ध में सहायता मिली। ओटोमन सेना मुख्य मोर्चों से हटा यहां लगनी पड़ी।

इस घटना को अरब विद्रोह कहा जाता है यह घटना 1915 के समय प्रथम विश्व युद्ध की है इसमें बिट्रिश सरकार की प्रमुख हार गैलीपोली में हुई तो उन्होनें अरब देशों में हुसैन की सहायता से विद्रोह किया तथा आजाद अरब देश का वाद किया, इसे हुसैन महान संधि कहते हैं।

परन्तु इस संधि के साथ ही बिट्रिश सरकार ने फ्रांस के साथ अरब देशों को बांटने की संधि की। जिस साइक्स पिकोट संधि कहा जाता है। पिकोट ने लेबनान, उतरी ईराक व सीरिया के तेल क्षेत्र मांगे तथा दक्षिणी पूर्वी टर्की लिये तथा इंग्लैण्ड ने दक्षिणी ईराक, जॉर्डन व पेलेस्टाईन लिया परन्तु यरूशलम को अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में रखा। यह संधि 10 जुन 1916 को हुई इसे भी गुप्त रखा गया।

इसके साथ ही साथ युद्ध में हुई आर्थिक हानि को कम करने के लिए यहुदियों को पेलेस्टाईन में चार गुना दाम पर भूमि बेचना प्रारंभ कर दिया। जिससे अरब देशों में यहुदियों के खिलाफ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इजरायल पर हमला किया तथा पेलेस्टाईन की समस्या का जन्म हुआ तथा बिट्रिश व पश्चिमी देशों के खिलाफ मुस्लिम जगत में आक्रोश फैला तथा विरोध में हमास जैसे आतंकवादी संगठन का जन्म हुआ। इसे बाल्फोर घोषणा कहते है।

बिट्रिश प्रभाव से द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अरब देश आजाद हुए इस समय शीत युद्ध प्रारंभ हो चुका था। अफगानिस्तान में रूस के आक्रमण के बाद इस क्षेत्र में कट्टर मुस्लिम धर्म को फैलाना प्रारंभ किया क्योंकि वह इसकी सहायता से अमेरिका रूस के खिलाफ अरब देशों का समर्थन प्राप्त करना चाहता था। इससे इस्लामी धर्म के कटटर पंत का उदय हुआ। जिसका परिणाम 09 नवम्बर 2001 के न्युयार्क हमले के रूप अमेरिका का चुकाना पड़ा। इसमें तालिबान का हाथ था जिसके उदय में अमेरिका ने सहायता प्रदान की।

परन्तु इसका बहाना ले उसने अफगानिस्तान में हमला कर अपनी सरकार बना तालिबान जिसे उसने विकसित किया अब सता से बाहर कर दिया। ईराक पर हमला कर मजबुत सरकार गिरा कमजोर सरकार की स्थापना की जिससे आई.एस.आई.एस. का उदय हुआ। आई.एस.आई.एस. ने सीरिया व ईराक में बड़े विस्तृत क्षेत्र पर हमला कर उस पर अधिकार कर लिया बड़ी संख्या में यजीदी व अरब शरणार्थी युरोप की ओर बड़े क्योंकि आई.एस.आई.एस. के खिलाफ कार्यवाही में यह क्षेत्र मानवीय जीवन के लिए खतरनाक बन गया।

इससे वर्तमान दशक की सबसे बड़ी शरणार्थी समस्या का जन्म ब्रिटिश तथा अमेरिकी सरकार की इतिहास मे की गई गलतियों का परिणाम है। शरणार्थियों के माध्यम से आतंकवाद की जड़े सम्पूर्ण युरोप में फैल गई। जिनके उदाहण फ्रांस मे चार्ली हेल्दो पर हमला, नार्वे में ओस्लो में दंगे तथा जर्मनी में कार द्वारा हत्याएँ आतंकवादी गतिविधियों की प्रमुख घटनाएं है। इसी प्रकार अमेरिकी हथियारों की सहायता से सउदी अरब ने यमन में हमला कर वहाँ से आतंकवाद के नये स्थान का निर्माण किया है जिसका उदाहरण कुवैत विमानतल पर किया हमला है।

फिलिस्तीन में इजरायल की कार्यवाहियाँ जॉर्डन, लेबनान व गाजा पट्टी में लगातार हो रही आतंकवादी गतिविधियों तथा यरूशलम के अवैध कब्जे तथा इनके खिलाफ इजरायल की कार्यवाहियाँ गाजा में हमास के प्रभाव का प्रमुख कारण है। इस कारण प्रत्येक वर्ष 10 हजार से अधिक लोग बेघर हो रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विश्व इतिहास की भूमिका :– रामशरण शर्मा व के के मण्डल
2. विश्व का इतिहास :– डॉ. देवनारायण आसोपा
3. युरोप का इतिहास(1815–1956) :– देवेन्द्र सिंह चौहान
4. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध :– डॉ. बी एल फड़िया
5. बीसवीं शताब्दी में विश्व इतिहास के प्रमुख मुद्दे : बदलते आयाम, अनिरूद्ध देशपांडे

चित्र सं 1 : हुसैन महान संघर्ष

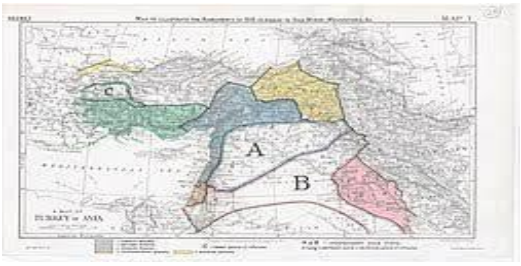

चित्र सं 2 : साइक्स पिकोट संधि

चित्र सं 3 : बाल्फोर घोषणा

चित्र सं 4 : फिलीस्तीन क्षेत्र